# 1

# धरती को हम स्वर्ग बनाएँ

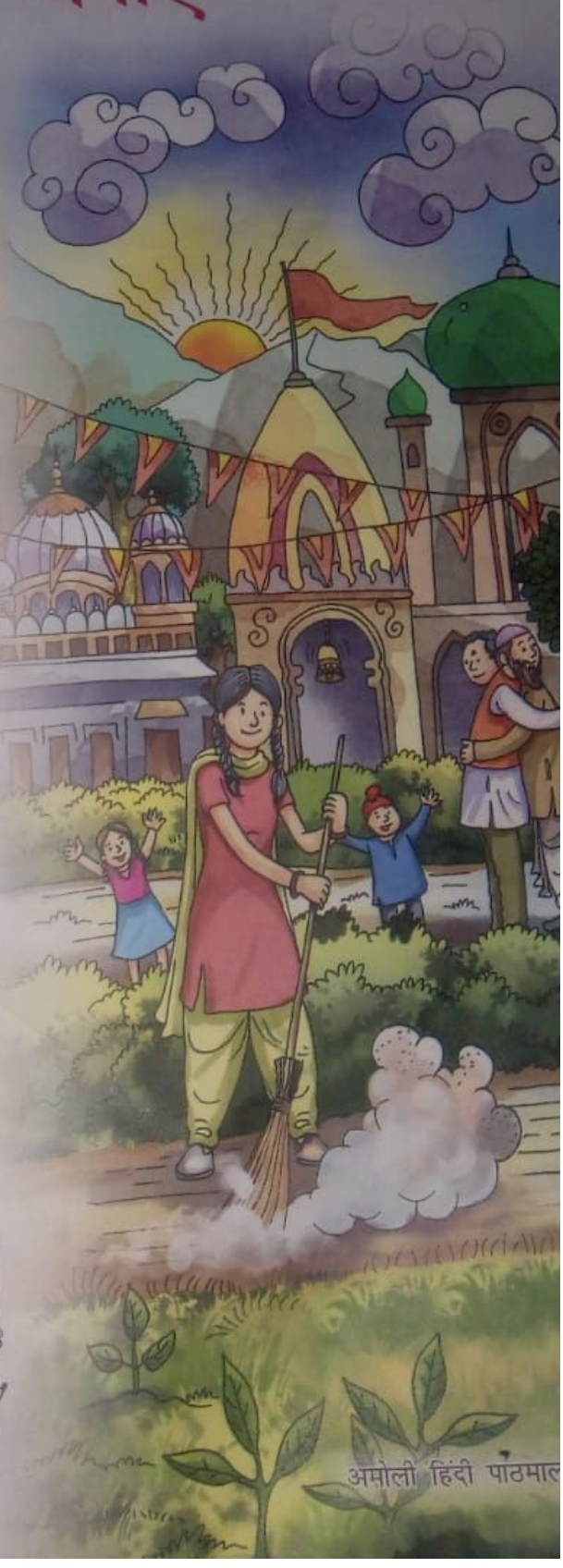

**पाठ-प्रवेश**

कवि विश्वबंधुत्व की भावना से अभिप्रेरित हैं। अतः प्रस्तुत कविता के माध्यम से उनका संदेश है कि धरती पर मर्यादा, अनुशासन और उन्नत संस्कृति का सर्वदा विकास होता रहे। लोग प्रकृति को किसी प्रकार का धोखा न दें। बुरे व्यसनों से सब दूर रहें। हम अपने अच्छे कर्मों से धरती को स्वर्ग समान बनाएँ।

आओ अब सौगंध[1] यह खाएँ,
धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।

स्वच्छ धरा हर मार्ग स्वच्छ हो,
गली-गली हर मार्ग वृक्ष हो।
वन, उपवन, कानन[2] सब झूमें,
नभ-जल-थल के प्राणी झूमें।
महाशक्ति[3] का स्वप्न सजाएँ,
धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।।

मर्यादा[4], अनुशासन, संस्कृति,
नारी का सम्मान हो नितप्रति।
जननी, गौ और मातृभक्ति हो,
पर सर्वोपरि राष्ट्रभक्ति हो।
भाषा के प्रति प्रीत[5] बढ़ाएँ,
धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।।

**शब्दार्थ**

1. कसम; 2. बड़ा जंगल; 3. प्रकृति, विश्व की रचना करने वाली मूल शक्ति; 4. प्रतिष्ठा, सीमा; 5. प्रेम;

सर्वधर्म समभाव सभ्यता,
कभी ना टूटे तारतम्यता[6]।
राजनीति या कूटनीति[7] हो,
न्याय मिले बस ना अनीति हो।
घर, समाज, जनपद[8] सब गाएँ,
धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।

षड् रिपु औ' त्रिदोष[9] सब भागें,
वहीं सवेरा जब हम जागें।
ना निसर्ग[10] से करें छलावा[11],
दुर्व्यसनों[12] को न दें बढ़ावा।
गुरु त्रिदेव[13] को शीश नवाएँ,
धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।।

*–गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'*

**शब्दार्थ**

6. निरंतर संपर्क का भाव; 7. छिपी हुई चाल; 8. जिला; 9. वात, पित्त, कफ़ के तीनों दोष; 10. प्रकृति; 11. धोखा; 12. बुरी आदत; 13. ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश–ये तीनों देव

**लेखक-परिचय**

'विद्या वाचस्पति' उपाधि से अलंकृत डॉ० गोपाल कृष्ण भट्ट 1970 से साहित्य सेवा में संलग्न हैं। इनकी कृतियाँ–प्रतिज्ञा (नाटक), पत्थरों का शहर (गीत, गज़ल और नज़्में), जीवन की गूँज (काव्य-संग्रह), अब रामराज्य आएगा (लघुकथा संग्रह), जब से मन की नाव चली (नवगीत संग्रह) प्रसिद्ध हैं। इन्हें साहित्य श्री, साहित्य शिरोमणि, काव्य मनीषी आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

# अभ्यास

## बात पाठ की

### मुख से

Oral Skills

इन प्रश्नों के उत्तर बताइए।

क. कवि क्या सौगंध लेने की बात कर रहे हैं?

ख. धरती और मार्ग कैसे होनें चाहिए?

ग. सबसे अधिक भक्ति किसके लिए होनी चाहिए?

Class- 6 Sub- Hindi

पाठ - 1

धरती को हम स्वर्ग बनाएँ



कवि - श्री गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल जी है।

शब्दार्थ -

सौगंध - कसम

कानन - बड़ा जंगल

महाशक्ति - प्रकृति, विश्व की रचना करने वाली मूल शक्ति

मर्यादा - प्रतिष्ठा, सीमा

प्रीत - प्रेम

तारतम्यता - निरंतर संपर्क का भाव

कूटनीति - छिपी हुई चाल

जनपद - जिला

त्रिदोष - वात, पित्त, कफ के तीनो दोष:

निसर्ग - प्रकृति

छलावा - धोखा

दुर्व्यसनो - बुरी आदत

त्रिदेव - ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश - ये तीनों देव

Teacher's Signature :

Date ..........

Expt. No. .................... Page No. 2

प्र.1 निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ, प्रसंग सहित भावार्थ लिखो :-

(1) आओ अब - - - - - प्रीत बढ़ाएँ, धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।

सन्दर्भ- यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक के पाठ-1 'धरती को हम स्वर्ग बनाएँ' कविता से ली गई है। इसके कवि श्री गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल' जी है।

प्रसंग- इन पंक्तियों में कवि धरती को साफ तथा स्वच्छ रखने और लोगों को मर्यादा, अनुशासन में रहकर नारी व मातृभूमि की रक्षा करने के लिए कह रहे है।

अर्थ- कवि गोपाल कृष्ण भट्ट जी कहते है कि आओ आज हम कसम खाएँ और अपनी धरती माँ को स्वर्ग बनाएँ। स्वच्छ धरती हो, रास्तो को साफ रखे, हर गली में वृक्ष तथा पौधे लगे हो। वन, उपवन सब हरे-भरे हो, धरती, आकाश और जल मे रहने वाले पशु-पक्षी, जीव-जन्तु स्वतन्त्र रहे, अपनी खुशी में मस्त रहें। इस प्रकार स्वच्छ प्रकृति का सपना सजाएँ आओ धरती को स्वर्ग बनाएँ।

आगे कवि कहते है सभी लोग अपनी मर्यादा मे रहे, अनुशासन को जीवन मे उतारे, अपनी संस्कृति का पालन करे, नारी का सम्मान करे, माता, गौमाता का आदर करे। लेकिन उससे पहले अपनी मातृभूमि की रक्षा की प्रतिज्ञा करे। अपनी भाषा के प्रति प्रेम की भावना रखे। इस प्रकार अच्छे कर्मो से धरती को स्वर्ग समान बनाएँ

2 सर्व धर्म - - - - - शीश नवाएँ, धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।

सन्दर्भ -

प्रसंग- इन पंक्तियो में कवि बुरे व्यसनों (आदतों) को

छोड़कर अच्छे संस्कार ग्रहण करने का कह रहे हैं।

अर्थ- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि सभी धर्मों के प्रति नम्रता का भाव रखे। एक-दूसरे से सम्पर्क बनाएँ रखे। राज की नीति हो या चाल (कूट) नीति हो सभी को न्याय मिले. कोई भी अत्याचार न सहे। इस प्रकार घर, समाज, जिले गाँव, शहर मिलकर धरती को देवलोक बनाएँ।

आगे कवि कहते हैं अपनी गलतियों का पता चलने पर उसे सुधारना ही बहुत बड़ा गुण है। अपने अंदर अच्छे गुणों को विकसित करने पर हमारे शत्रु व दोष सभी दूर हो जाते हैं। अब हमें न तो प्रकृति से छेड़छाड़ करना है और न ही अपने अंदर बुरी आदतों को डालना है बस हमें अच्छे संस्कार ग्रहण कर गुरु, माता-पिता और ईश्वर का सम्मान करे। तथा उनके आगे शीश नवाएँ इसी प्रकार अच्छे गुणों के साथ धरती को स्वर्ग बनाएँ

## अभ्यास

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-

(क) धरती को स्वर्ग बनाने के लिए बाह्य आवरण कैसा होना चाहिए?

उत्तर- धरती को स्वर्ग बनाने के लिए बाह्य आवरण (वातावरण) साफ व स्वच्छ हो, वन, उपवन हरे-भरे वृक्षों से सुशोभित हो। तथा संसार के सभी प्राणी स्वस्थ रहे, खुश रहे।

Teacher's Signature :

प्र.2 मर्यादा, अनुशासन और संस्कृति के लिए कवि की क्या क्या कल्पनाएँ है ?

उत्तर- धरती पर मर्यादा, अनुशासन और उन्नत संस्कृति का विकास होता रहे। स्त्री जाति का सम्मान करे। गौमाता व माता के प्रति निष्ठावान रहे। राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाएँ। अपनी भाषा को अधिक महत्त्व दे। आदि कल्पना लेकर कवि धरती को स्वर्ग का रूप प्रदान करने को कह रहे है।

प्र.3 देश मे सभी धर्मों के लिए कैसी व्यवस्था होनी चाहिए ?

उत्तर- देश में सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना हो, सभी धर्मों को समान अधिकार प्राप्त हो, राजनीति और कूटनीति के चलते कभी किसी निर्दोष को सजा न हो। समाज में जाति-धर्म का भेद-भाव न हो सभी धर्मों के लोग अपने त्योहार, रीति-रिवाज तथा सुख-दुख मे एक साथ खड़े रहे।

प्र.4 देश मे न्याय-व्यवस्था के विषय में कवि का क्या दृष्टिकोण है ?

उत्तर- कवि गोपाल कृष्ण भट्ट जी कहते है कि देश की न्याय-व्यवस्था एवं कानून प्रबल व शक्तिशाली हो जो न्याय और अन्याय की लड़ाई में किसी बेकसूर को दंड न दे।

प्र.5 लोगों के व्यवहार और आचरण के विषय में कवि क्या सोच रहे है?

उत्तर- कवि कहते है कि लोगों का व्यवहार अपने माता-

Expt. No.

Date



पिता, गुरु, व ईश्वर के प्रति सम्मानपूर्वक होना चाहिए। बुरी आदतों को छोड़कर अच्छे गुणों को अपनाना है।

प्र.6 सही कथन पर '✓' अथवा गलत कथन पर × का चिह्न लगाकर लिखो :-

1 हर मार्ग पर वृक्ष, हर मार्ग और धरती स्वच्छ हो। ✓

2 वन, उपवन सब खुशहाल हो। ✓

3 केवल गौमाता की भक्ति हो। ×

4 भाषा के प्रति प्रेम आवश्यक नहीं है। ×

5 सबको न्याय मिले, कहीं भी अनीति न हो। ✓

व्याकरण

प्रश्न7 'र' के उचित रूपों का प्रयोग करते हुए सार्थक शब्द बनाइए।

(क) स्वग - स्वर्ग (ख) मयादा - मर्यादा (ग) राष्टभक्ति - राष्ट्रभक्ति

(घ) निसग - निसर्ग (ङ) पति - प्रति (च) पीत - प्रीत

(छ) माग - मार्ग (ज) दुव्यसन - दुर्व्यसन (झ) सवोपरि - सर्वोपरि

प्र.8 दिए गए शब्दों के दो - दो पर्यायवाची लिखिए।

(क) धरती = धरा, पृथ्वी

Teacher's Signature :

ख उपवन = बाग , वाटिका

ग मार्ग = रास्ता पथ

घ नारी = स्त्री औरत

ङ. जननी = माँ माता

च रिपु = शत्रु दुश्मन

(रफ कौपी में करे)

प्र.9 'ऋ' स्वर है, इसकी मात्रा 'ृ' होती है; जैसे - ऋ - (ृ)
वृक्ष मातृभक्ति, संस्कृति आदि।
अब आप 'ऋ' के दो शब्द सोचकर लिखिए
(i) ____ (ii) ____
'र' व्यंजन है, वह किसी व्यंजन के साथ संयुक्त रूप में आने पर इससे भिन्न रूप में लिखा जाता है; जैसे - प्राण, पर्व, ड्रम आदि।
अब आप 'र' के तीन शब्द सोचकर लिखिए।
(i) ____ (ii) ____ (iii) ____

प्र.10 कोई एक कीजिए।
(क) 'प्रकृति के विकास में ही धरती का विकास है।' अपने विचार लिखिए।
(ख) 'विश्वशांति की मुहिम में हमारा भी योगदान हो।' इस विषय में आप क्या कर सकते हैं? बताइए।